© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2021

प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में कृषक जीवन का यथार्थ

बिन्दु छिम्पा

एम.ए. हिन्दी, नेट, जे.आर.एफ.

शोध सार :–

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें कृषकों के जीवन का मार्मिक व यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास का केन्द्र–बिन्दु गरीब किसान होरी व उसकी पत्नी धनिया के इर्द–गिर्द घुमता है जो कृषक समाज की संस्कृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में इन्होंने आदर्शवादी घेरे को तोड़कर यथार्थ की तस्वीर प्रस्तुत की है। होरी को मर्यादा की बहुत फिक्र रहती है, उसे लगता है कि राय साहब जैसे जमींदार लोगों से मिलते रहने से सामाजिक मर्यादा बढ़ती है। होरी के मन में एक गाय की अभिलाषा है, गाय उसके लिए सजीव सम्पत्ति के साथ मान–मर्यादा की भी सूचक है और अपनी परिस्थितियों के बिल्कुल विपरीत जाकर गाय को 80 रुपये के कर्ज पर खरीद भी लेता है लेकिन होरी का भाई हीरा द्वेषवश गाय को विष देकर मार डालता है। गोबर व भोला की विधवा पुत्री झुनिया का प्रेम भी इसी गाय के कारण हुआ लेकिन उसके गर्भवती होने व धनिया द्वारा उसे अपने घर रखने पर पंचायत उन पर भारी जुर्माना लगा देती है। इन्हीं परिस्थितियों में जमींदारो के कर्ज से व बिरादरी की मर्यादा ढ़ोते हुए होरी की मृत्यु हो जाती है और गाय का गोदान न करके भूखे रहकर मजदूरी से उपार्जित किये गए 20 आने से गोदान किया जाता है। इस प्रकार गरीब किसानों पर दंड व जुर्माना लगा लगाकर उनसे अनाज व पैसे हड़पे जाते हैं और ये किसान विवश होकर कुछ नहीं कर पाते हैं।

मुख्य शब्द :– अभिलाषा, यथार्थ, मर्यादा, खुशामद, शानोशौक्त, वज्राघात, लोकलाज, पाखण्ड, अनुष्ठान, सर्वोत्कृष्ट, अर्थव्यवस्था, पराकाष्ठा।

यथार्थ अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा :–

यथार्थ दो पदों से मिलकर बना है– यथा और अर्थ, यथार्थ का शाब्दिक अर्थ है यथावस्तु और मति व ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव को वास्तविक रूप में अर्थात जो जैसा है, उसको उसी रूप में प्रस्तुत करना ही यथार्थ है। प्रेमचन्द के अनुसार ''अगर हम यथार्थ को हू–ब–हू खींचकर रख दें तो उसमें कला कहाँ है? कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है।''[1] प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नग्न यथार्थ को प्रस्तुत नहीं किया बल्कि यथार्थ को स्वस्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

गोदान प्रेमचंद का कृषक जीवन पर आधारित महाकाव्यात्मक तथा यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें किसानों के शोषण का मार्मिक व यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है, और इसमें ग्रामीण जीवन की आत्मा को सशक्त अभिव्यक्ति दी गई है।कृषकों की दयनीय दशा तथा उनके संघर्ष और तत्कालीन समाज में

हो रहे शोषण व अत्याचार का मर्मस्पर्शी वर्णन प्रस्तुत किया गया है। गोदान का नायक होरी व नायिका धनिया पूरे कृषक समाज की संस्कृति का मार्मिक व यथार्थ चित्रण सजीव व साकार करते हैं। जमींदारों व साहूकारों का कर्ज चुकाने के लिए पूरा जीवन लगा देने पर भी ऋण से मुक्ति नहीं मिल पाती है और किसान अपना सम्पूर्ण जीवन उन्हीं की जी हजूरी करने के लिए विवश होता है। होरी का जीवन इतना त्रासदीपूर्ण है कि वह चाहे तो भी कुछ बदल नहीं सकता क्योंकि परिस्थितियाँ उसके प्रतिकूल है। ''तू जो बात नहीं समझती, उसमें टाँग क्यों अड़ाती है भाई!.... गाँव में इतने आदमी तो है।, किस पर बेदखली नहीं आई, किस पर कुड़की नहीं आई। जब दूसरे के पाँवो–तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।''[2] होरी को लगता है कि बड़े लोगों की खुशामद करने पर कुड़की से बचा जा सकता है। ये कृषक लोग जो हमारे अन्नदाता है, वो ही इतने बेबस व विवश है, उनकी जिन्दगी जमींदारों के पैरें के नीचे दबी हुई हैं, यही इनके जीवन की वास्तविकता है। धनिया खुशामद का विरोध करती है, जमींदारों की खुशामद से इनके आगे–पीछे दौड़ने से कुछ नहीं होने वाला, लगान तो देना ही पड़ेगा। धनिया को लगता है कि उसके तीन बच्चे मरने से बच जाते यदि सही समय पर दवा–दारू मिल जाती। ''पेट की चिन्ता ही के कारण तो। कभी तो जीवन का सुख न मिला। इस चिरस्थायी जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था। जिस गृहस्थी में पेट की रोटियाँ भी न मिलें, उसके लिए इतनी खुशामद क्यों?''[3] किसानों के जीवन की यही वास्तविकता है कि उनके बच्चे ईलाज के अभाव में उनकी आँखों के सामने दम तोड़ देते हैं। रायसाहब जैसे जमींदार लोग अपनी शानोशौक्त को पूरा करने के लिए किसानों पर अत्याचार करते रहते है लेकिन दिखावा बहुत परवाह होने का करते हैं। ये लोग दिखावे के लिए जेल भी चले जाते हैं ताकि किसानों को उनसे श्रद्धा बनी रहे परन्तु खाना ना मिलने पर मजदूर काम करने से मना कर देते हैं तो उनके माथे की त्योरियां चढ़ जाती है। ''चलो, मैं इन दुष्टों को ठीक करता हूँ। जब कभी खाने को नहीं दिया, तो आज यह नई बात क्यों? एक आने रोज के हिसाब से मजूरी मिलेगी, जो हमेशा मिलती रही है; और इस मजूरी पर काम करना होगा, सीधे करें या टेढ़े।''[4] राय साहब जैसे जमींदार लोग कम पैसे खर्च करके उनसे मजदूरी करवाना चाहते हैं और इसी प्रवृति व व्यवहार कुशलता से किसानों का शोषण करते रहते हैं। होरी का पुत्र गोबर किसानों की विद्रोह भावना व यथार्थ का प्रतिनिधित्व करता है और साहुकारों व जमींदारों के प्रति क्षोभ प्रकट करता है। उन लोगों की जी हजूरी की क्या जरूरत है बैगार तो हम लोग देते ही हैं और उनके आदमी भी जब जी चाहे आकर गालियां सुना देते हैं। ''यह सब मन को समझाने की बातें हैं। भगवान सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।''[5] यदि उनको हमारी तरह खेत में मजदूरी करनी पड़े तो वो सब पूण्य–धर्म भूल जाते और उनमें गरीबों के प्रति कोई दया भावना नहीं होती, उन्हें तो बस उनका खून चूसने से मतलब होता है। अमरपाल सिंह कृषकों के प्रति कोई उदारता नहीं प्रकट करते हैं, जब किसान पूरी तरह मजबूर होते हैं तभी लगान वसूलने का समय निश्चित करते हैं। आषाढ़ के महीने में जब पहली बरसात होती है और किसान अपने हल व बैल

लेकर अपनी फसल बोना चाहता है– तभी राय साहब ने कारकुन से कहकर भेजा, ''जब तक बाकी न चुक जाएगी, किसी को खेत में हल न ले जाने दिया जाएगा।''[6] सारे गाँव के कृषकों पर वज्राघात हो जाता है तथा सोचते हैं कि आज तक कभी ऐसी सख्ती नहीं की तो इस बार ऐसा क्यों हुआ और पूरे गाँव में हड़बड़ी मच जाती है तथा साहुकारों के पास कर्ज के लिए दौड़ते हैं। होरी के मन में भी और किसानों की तरह गाय पालने की लालसा होती है, भोला के पास गाय देखकर उसकी इच्छा और तीव्र हो जाती है। वह सोचता है कि गाय से ही तो द्वार की शोभा बढ़ती है और जब यह मेरे द्वार पर बंधेगी तो घर स्वर्ग बन जाएगा। भोला उसे भूसे के अभाव में गाय बेचना चाहता है तो होरी को लगता है कि मुश्किल में फंसे हुए आदमी से गाय लेना पाप है लेकिन फिर भी भोला उसे गाय दे देता है। सारा गांव गाय देखने आता है लेकिन हीरा व शोभा नहीं आते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि पहले की कमाई को छुपाकर रखा था, उसी से यह गाय लाए है। हेारी विवश होकर गाय बेचने की बात भी सोचता है लेकिन नहीं बेच पाता तभी उसी रात को हीरा गाय को विष दे देता है। गाय को तड़पते हुए देखकर गोबर कहता है– ''दादा, सुन्दरिया को क्या हो गया? क्या काले नाग ने छू लिया? वह तो पड़ी तड़प रही है।''[7] होरी व धनिया के सामने गाय तड़प–तड़प कर मर जाती है। यही यथार्थ दिखाया गया है कि संसार में व्यक्ति अपने सुख से सुखी नहीं होता बल्कि दुसरों के सुख को देखकर दुःखी होता है। गांव का चौकीदार गाय के मरने की रपट लिखा देता है तो डरकर हीरा भाग जाता है, दरोगा तहकीकात करने पहुंच जाता है और सोचता है कि कुछ भी करके इनसे पैसे मिल जाए। इसी कारण हीरा के घर की तलाशी की बात करता है तो होरी इसे घर का अपमान समझता है तथा धनिया से छुपकर रिश्वत देना चाहता है तो धनिया उसका विद्रोह करती है, वह पंचों को फटकारती हुई कहती है, ''मैं दमड़ी भी न दूँगी, चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े। हम बाकी चुकाने को पचीस रूपये माँगते थे, किसी ने न दिया। आज अँजुली–भर रूपये ठनाठन निकाल के दे दिए, यहाँ तो बाँट–बखरा होने वाला था, ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले!''[8] हमारे समाज में रिश्वत का लालच इस कद्र फैल चुका है कि समाज को खोखला कर रहा है। हर इंसान को रिश्वत देने के लिए मजबूर किया जा रहा है, रिश्वत के कारण यथार्थ सामने नहीं आ पाता है। होरी जैसे कृषक लोग भी घर की इज्जत बचाने के लिए रिश्वत देने का प्रयत्न करते हैं और इसी तरह उनको और उधार लेना पड़ता है। होरी माघ के महीने की सर्द रात को मटर की खेती संभालने के लिए फटे हुए कंबल में मुख छुपाकर गरमाने का प्रयत्न कर रहा था जो उसकी पैदाईश से भी पहले का है, तभी वहाँ धनिया आती है और उसे कहती है, झुनिया पाँच महीने का गर्भ लेकर आ गई है और धनिया तरस खाकर उसे अपने घर पर रख लेती है क्योंकि गोबर तो लोकलाज के डर से उसे अपने घर के पास छोड़कर भाग चुका था। इसी से नाराज होकर गांव वाले उसका हुक्का पानी बंद कर देते हैं। झुनिया के पुत्र होने के दूसरे ही दिन जब पंचायत द्वारा तीस मन अनाज व सौ रूपये नकद का जुर्माना लगाया जाता है तो होरी के परिवार पर आपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है। ''मैं एक दाना न अनाज दूँगी, न कौड़ी डाँड़। जिसमें बूता हो, चलकर मुझसे ले। अच्छी दिल्लगी

है! सोचा होगा, डाँड़ के बहाने इसकी सब जैजात ले लो।''[9] इसमें यह वास्तविकता दिखाई गई है कि गरीबों पर जुर्माना व ब्याज पर ब्याज लगाकर वसूली की जाती है जो उनसे जिंदगी भर नहीं चुकता है। होरी तीस मन अनाज को अपने खेत से ही ढोकर पंचों के पास पहुँचाने लगता है जब डेढ़ दो मन जौ रह जाता है तो धनिया उसे रोकती है। फिर भी होरी नहीं मानता और टोकरी को सिर पर रखना चाहता है तो धनिया टोकरी पकड़कर कहती है, ''इसे तो मैं न ले जाने दूँगी,चाहे तुम मेरी जान ही ले लो। मर–मरकर हमने कमाया, पहर रात–रात को सींचा, अगोरा, इसलिए कि पंच लोग मूँछों पर ताव देकर भोग लगाएँ।''[10] फिर भी जमींदार लोगों को इन पर कोई तरस नही आता, वो इनका इसी तरह खून चूसते रहते हैं। इस उपन्यास में साहुकारों व जमींदारों के अत्याचार के परिणामस्वरूप केवल होरी की यह हालत नहीं थी बल्कि पूरे गांव की ऐसी दयनीय स्थिति थी। किसान संगठित होकर जब उनका विद्रोह करते हैं तो पूरी ताकत से उनको दबा दिया जाता है और जमींदारों के शोषण को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सहन करते रहते हैं। ''ऐसा एक आदमी भी नहीं, जिसकी रोनी सूरत न हो, मानो उनके प्राणों की जगह वेदना ही बैठी उन्हें कठपुतलियों की तरह नचा रही हो। चलते–फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे, इसलिए कि पिसना और घुटना उनकी तकदीर में लिखा था....''[11] इसमें न केवल कृषकों की दयनीय दशा का बल्कि उनकी हताशा, लाचारी और निरीहता का भी जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है। होरी जैसे किसान पैसे के अभाव में अपनी संतान का अनमेल विवाह करने पर मजबूर हो जाते हैं। रूपा का विवाह एक 40 साल के अधेड़ रामसेवक से कर दिया जाता है। कंकड की खुदाई शुरू होने पर होरी दिन में तो ग्राम में कंकड की खुदाई व रात को सूत की कताई करने लगा और अपनी क्षमता से अधिक काम करने पर व अधभूखा रहने पर उसे लू लग जाती है और उसे लगता है कि अब अंत समय नजदीक है तो धनिया से क्षीण स्वर में कहता है, ''मेरा कहा–सुना माफ करना धनिया! अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई। अब तो यहाँ के रूपये क्रिया–करम में जाएँगे, सब दुर्दशा तो हो गई। अब मरने दे।''[12] गरीब किसान के जीवन की यही दुर्दशा होती है। सारी उम्र दिन–रात काम करके भी वह अपनी आवश्यकताएं पूरी नहीं कर पाता और समय से पहले ही उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। इस उपन्यास में पुरोहितों के पाखंड का बड़ा ही यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। पुरोहितों का काम है अपने यजमान का कल्याण करना तथा शास्त्रों के अनुसार धर्म के अनुष्ठान करवाना परन्तु आधुनिक काल में ये पुरोहित बहुत लालची हो गये हैं। ये पुरोहित कृषकों का शोषण उनकी जिंदगी में तो करते ही हैं। मृत्यु के बाद भी उन्हें नहीं छोड़ते, धर्म के शास्त्रों का हवाला देते हुए कहते हैं कि मृत्यु के समय अगर कोई गौ का दान करता है तो वो गाय की पूंछ पकड़ कर इस संसार की वैतरणी को पार कर सकता है। पुरोहित पाखंड झाड़ता हुआ कहता है कि वास्तविक गोदान न हो तो झूठा गोदान ही कर दो। धनिया मशीन की भांति उठकर बीस पैसे का गोदान करती है और कहती है, ''महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गो–दान है।''[13] गौ से अपार प्रेम करने वाला भारतीय किसान

इसी तरह सपूर्ण जीवन कष्ट सहते हुए एक गाय की अभिलाषा पूर्ण नहीं कर पाता है और उसी गौ का दान कर्मकांडियों द्वारा धर्म के नाम पर करवाया जाता है।

निष्कर्ष :–

गोदान प्रेमचंद का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है। इन्होंने गोदान उपन्यास में गौ का दान करवाया है, ये गोदान कृषक समाज को खोखला करती उस सामन्तवादी व्यवस्था का है जो किसान मर्यादा के नाम पर ढोते रहते हैं। इस उपन्यास में कृषक जीवन की करूण गाथा व उससे जुड़े यथार्थ का कलात्मक व सूक्ष्म चित्रण किया गया है, इसलिए इसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा गया है। तत्कालीन व समकालीन समाज और उसकी अर्थव्यवस्था को चरमरा देने वाला आक्रोश इस उपन्यास में पराकाष्ठा पर है।

संदर्भ –

1. सत्यकाम, आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचंद, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा॰ लि॰ नई दिल्ली, पृष्ठ 58.
2. मुंशी प्रेमचंद, गोदान, मंजूल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. भोपाल, पृष्ठ 11.
3. वही, पृष्ठ 11
4. वही, पृष्ठ 21
5. वही, पृष्ठ 25
6. वही, पृष्ठ 107
7. वही, पृष्ठ 112
8. वही, पृ॰ 120
9. वही, पृ॰ 133
10. वही, पृ॰ 135
11. वही, पृ॰ 358
12. वही, पृष्ठ 365
13. वही, पृष्ठ 366